बी० ए० पार्ट - (1) प्रतिष्ठा एवं सहायक
पेपर - II
असामान्य मनोविज्ञान
डॉ० रमेन्द्र कुमार सिंह
मनोविज्ञान विभाग
डी० के० कॉलेज, डुमराँव

[मन के गत्यात्मक पहलू
Dynamic aspect of mind]

फ्रायड ने अपने अनुभवों के आधार पर मानव व्यवहार की व्याख्या को समझने के लिये मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोणों को प्रस्तुत किया। इसके अंतर्गत इन्होंने मन की दो ~~अल~~ पहलू बताये हैं। दूसरे पहलू को Dynamic aspect of mind कहा है। यहाँ मूल प्रवृत्तियों से उत्पन्न संघर्षों का समाधान होता है। ये (instinct) जन्मजात होती हैं और सभी प्रकार की समस्याओं व्यवहारों के लिये जिम्मेवार हैं।

फ्रायड के अनुसार मूल प्रवृत्तियाँ दो तरह की होती हैं :— (I) Life instinct (जीवन मूल प्रवृत्ति)

(II) मृत्यु मूल प्रवृत्ति (Death instinct)

जीवन मूल प्रवृत्तियों से रचनात्मक कार्य होती है, जबकि मृत्यु मूल प्रवृत्ति से विध्वंसात्मक कार्य एवं आक्रमणकारी व्यवहार होता है। सामान्य व्यक्तियों में इन दोनों मूल प्रवृत्तियों में संतुलन बना रहता है, जबकि असामान्य व्यक्तियों में दोनों में उत्पन्न संघर्ष से ~~होता और~~ संतुलन बिगड़ जाता है। ~~वे असामान्य व्यक्तित्व की उत्पत्ति होती~~ है। व्यक्तित्व में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है और व्यक्ति कुसमायोजन का शिकार हो जाता है। मूल प्रवृत्तियों से उत्पन्न संघर्षों का समाधान Id, ego, Superego के माध्यम से व्यक्ति कर लेता है तो सामान्य रहता है। लेकिन जब तीनों में असंतुलन उत्पन्न हो जाता है तो व्यक्ति कुसमायोजित हो जाता है। ये तीनों Agent एक दूसरे के विरोधी स्वभाव के होते हैं। जिससे संघर्ष होते रहता है। संघर्ष का समाधान के लिए चल रहे रस्साकशी से ~~संतुलित~~ व्यक्तित्व का विकास संभव हो जाता है।

Scanned with CamScanner

इड (ID) :- मन के गत्यात्मक पहलू का पहला प्रतिनिधि अथवा Agent है। यह पूर्णतः Unconscious होता है। इड हर प्रकार की इच्छाओं की जननी है। यह आनन्द के सिद्धान्त से निर्धारित होती है जो आतुर इच्छाएँ लिये रहती है। बच्चों में केवल Id होते हैं Ego, Superego का विकास नहीं हुआ रहता है। ये अपनी इच्छाओं की तत्काल पूर्ति चाहते हैं समय एवं परिस्थिति से उनका कोई लेना देना नहीं है।

Id में Life instinct एवं Death instinct दोनों होता है। इसीलिए यह रचनात्मक एवं आक्रामक दोनों व्यवहार करके सुख की अनुभूति करता है। उन्हें जीवन की वास्तविकता से कोई लेना देना नहीं होता है। किसी भी तरह अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना चाहते हैं। ये पूर्णतः अचेतन एवं अतार्किक होते हैं।

2- अहम (Ego) बालक जैसे जैसे बड़ा होता है उसको वास्तविकता का ज्ञान होने लगता है। उसका Self (स्व) विकसित होने लगता है। फ्रायड के अनुसार "स्व की चेतना ही Ego है।"

Ego की कुछ विशेषताएँ होती हैं-

(i) यह चेतन और अचेतन दोनों होता है। यानि न तो पूर्ण चेतन होता है और न तो पूर्ण अचेतन ही होता है।

(ii) इसे समय एवं परिस्थिति का ज्ञान होता है। यानि कब कौन से कार्य करना चाहिए उसकी जानकारी होती है।

(iii) यह Id एवं ~~Ego के बी~~ Superego के बीच संतुलन बनाने का कार्य करता है।

(iv) यह बीच का रास्ता निकालता है।

(v) यह अवसरवादी होता है। इसे

(vi) इसे नैतिकता से कोई खास मतलब नहीं होता है। अवसर मिलते ही इच्छाओं की पूर्ति कराने का प्रयास करता है।

Scanned with CamScanner

(iii) परांहम् (Super Ego) :— इसे अहम् से ऊँचा (Above-I) भी कहा गया है। मन के गत्यात्मक पहलू का तीसरा प्रमुख भाग है। बच्चा बड़ा होकर धीरे धीरे social & cultural norms को सीखता है और इसी सामाजिक शिक्षण के फलस्वरूप अहं का ही विकसित एक हिस्सा Super Ego का रूप ले लेता है। यह आदर्शवादी एवं नैतिकतावादी है।

विशेषताएँ — इसकी अपनी कुछ विशेषताएँ हैं।—

(i) यह व्यक्तित्व का नैतिकता का भंडार है। परांहम् का उचित विकास होने पर व्यक्ति गलत कार्य को नहीं करते हैं।

(ii) यह पूर्णतः चेतन होता है। यह वातावरण की वास्तविकता को समझता है।

(iii) यह आदर्शों का भंडार है। यह परम्परागत विचारों को ढोता है।

(iv) इसका विकास समाज एवं संस्कृति से होता है।

(v) समाजीकरण में इसका योगदान होता है।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि फ्रायड ने अपने चिकित्सकीय अनुभव के आधार पर मन का दो पहलुओं की वैज्ञानिक व्याख्या करने में सफलता प्राप्त की थी। यद्यपि इससे सम्बन्धित बहुत सी बातें अरस्तु, अफलातून आदि विद्वानों ने की, पर फ्रायड इसे वैज्ञानिक आधार देने में सफल रहे। व्यक्तित्व की उचित विकास एवं संतुलित व्यवहार के लिए मन के दोनों पहलुओं के विभिन्न भागों एवं अभिकर्ताओं में संतुलन का होना आवश्यक है।

R.K. Singh 05/1/2020
डॉ० रमेन्द्र कुमार सिंह
मनोविज्ञान विभाग
डी० के० कॉलेज,
डुमराँव।

Scanned with CamScanner